बीमारी करने वाले सूक्ष्म जीवाणु और परजीवी

श्रेणी	उपश्रेणी	खास लक्षण	कौन कौन सी बीमारियाँ होती हैं	कौन सी दवाएं असरकारी होती हैं
क) वायरस (बहुत छोटे जीव)	बहुत से	वायरस से होने वाली ज्यादातर बीमारियाँ जीवाणु रोधी (अँटीबायोटिक) दवाओं से ठीक नहीं होतीं, सिर्फ छोटी माता, हर्पीज़ को छोड़कर	जुकाम, फ्लू, वायरस से होने वाली खाँसी, वायरस से होने वाले चकते, खसरा, छोटीमाता, कनफेड़ (गलसुआ), बच्चों को होने वाले दस्तों में से लगभग आधी तरह के, वंक्षण लसिका कणिका गुल्म, रोहे, एड्स, छूतहा यकृत शोथ, मस्तिष्क शोथ और कुछ तरह का निमोनिया	छोटी माता और हर्पीज़ के वायरसों को छोड़ और वायरसों को कोई भी दवा मार नहीं सकती। एड्स वायरस का नियंत्रण दवाओं से संभव है, लेकिन पुरा खात्मा नही हो सकता।
ख) बैक्टीरिया	ग्राम पॉझीटिव्ह (बैक्टीरिया का एक प्रकार)	ग्राम पॉझीटिव्ह बैक्टीरिया जीवविष स्त्रावित करते हैं - (टेटनेस, डिप्थीरिया) - इन्हें बहिर्जीवविष कहते हैं।	पीप वाले संक्रमण गले में कई तरह की खराश, डिप्थीरिया, (गलघोंटू) निमोनिया, टेटनेस, घावों में छूत, मध्य कर्ण की छूत, गिल्टी रोग, नेत्रश्लेश्मा शोथ आदि	विशिष्ट जीवाणुरोधी दवाएं जैसे पैन्सेलीन, सल्फा, ऐरिथ्रोमाईसीन और विस्तृत स्पैक्ट्रम जीवाणुरोधी दवाएं जैसे टैट्रासाइक्लीन, कोट्रीमोक्साज़ोल, ऐम्पिसेलीन और क्लोरोमाईसिटीन
ख) बैक्टीरिया	ग्राम निगेटीव्ह (बैक्टीरिया का दूसरा प्रकार)	ये कोई जीवविष स्त्रावित नहीं करते। परन्तु इनमें अंतर्जीवविष होते हैं। जो कि बैक्टीरिया के मरने के बाद निकलते हैं	टॉयफाइड, काली खाँसी, बहुत सारे आंतों के संक्रमण (जैसे हैजा और दस्त), पेशाब के रास्ते की छूत, महिला प्रजनन तंत्र की छूत, सिफलिस, सुजाक	विशिष्ट जीवाणुरोधी दवाएं जैसे स्टैरप्टोमाईसीन, रिफामपिसीन, जैन्टामाईसीन आदि और विस्तृत स्पैक्ट्रम प्रति सूक्ष्म जीवाणु दवाएं जैसे ऐम्पिसेलीन, क्लोरोमाईसीटीन, कोट्रीमोक्साज़ोल, टैट्रासाइक्लीन और सेफालोपोरिन
ख) बैक्टीरिया	एसिड फास्ट बैसिलि	खास तकनीक से पहचाने जाते हैं	तपेदिक, (टी.बी.) कोढ़ (कुष्ठरोग)	रिफामपिसीन, स्टैरप्टोमाईसीन आदि
ग) क्लैमाइडिआ	बहुत से	कोशिका के अंदर बढ़ते हैं	रोहे, वंक्षण लसिका कणिका गुल्म	टैट्रासाइक्लीन
घ) फंफूंद	बाहरी त्वचा पर असर करने वाली और अंदर असर करने वाली फंफूंद	मरे हुए ऊतकों पर बढ़ती है, इसीलिये चमडी के उपरी परत में पनपते है, जैसे दाद।	वंक्षण में पनपने वाले रिंग कृमि, त्वचा, खोपड़ी, नाखूनों, योनि की फंफूंद से होने वाली छूत, कैडिडा रोग और कुछ प्रकार का निमोनिया	बाहर लगाले के लिए मिकोनाज़ोल, जैनेटिअन वायलेट और हैमेसिन, ऐम्फोटेरेसिन बी और ग्रीसोफुलवीन अंदर के इस्तेमाल के लिए

च) कृमि	आंतों के कृमि	गोल कृमि, अंकुश कृमि, फीता कृमि, पिन कृमि, सूत्र कृमि और लिवर पर्णाभ आदि	आंतों के कृमि से होने वाले संक्रमण और लिवर के संक्रमण	मेबेन्डाज़ोल, ऐलबेनडाज़ोल
छ) कृमि	गिनिआ कृमि (नाडू)	जलीय साईक्लॉप्स में जीते और वहीं से फैलते हैं	गिनिआ कृमि के संक्रमण	किसी भी दवा से इन पर असर नहीं होता
ज) एककोशकीय परजीवी	अमीबा / जिआर्डिआ	मल से फैलते हैं	पेचिश, वृहदान्त्रशोथ	मैट्रोनिडाज़ोल
झ) एककोशकीय परजीवी	प्लासमोडियम	एनाफ्लीज़ मच्छर से फैलते हैं	मलेरिया	क्लोराक्वीन और अन्य प्रति मलेरिया दवाएं
प) एककोशकीय परजीवी	ट्राईकोनोमास	सीधे संपर्क से फैलते हैं	योनि शोथ, शिश्न मुंड शोथ	मैट्रोनिडाज़ोल

मलेरिया की छूत के लिए आशय

आइए इन शब्दों का मलेरिया के संदर्भ में समझें :

मलेरिया के मामले में छूत का आशय मलेरिया के रोगी और वाहक यानि कि छूतग्रस्त (संक्रमित) एनोफलीज़ मच्छर होते हैं। यहाँ से ही रोगाणु नए पोषद को संक्रमित करते हैं।

अब जिन लोगों के माध्यम से ये छूत हमारे गाँव या हम तक पहुँची है वो ही छूत का स्त्रोत हैं। आशय अकसर पास ही में स्थित होता है।

मलेरिया का परजीवी ऐनोफलीज़ मच्छर के काटने से फैलता है। इसलिए ये मच्छर मलेरिया के लिए वैक्टर का काम करते हैं।

मलेरिया के मामले मे कोई भी वाहन नहीं होता। ऐसा इसलिए क्योिक यह शब्द निर्जीव चीज़ों के लिए इस्तेमाल होता है जैसे हवा, पानी, खाना आदि।